डॉ. निर्मला शर्मा

जन्मतिथि –17.07.1979
जन्मस्थान– डींग (राजस्थान)
पिता का नाम–श्री राधावल्लभ शर्मा
माता का नाम–श्रीमती गोदावरी देवी
मोबाइल नंबर–9414359857

अवसर को पहचानकर, जिसने साधा काम।
उसका ही संसार में, सफल हुआ है नाम।
सफल हुआ है नाम, लक्ष्य को आखिर पाया।
जीवन का उद्देश्य, समझ में जिसको आया।
सुनो पते की बात, ये जीवन बीते सर सर।
आलस को दो त्याग, बीत जाएगा अवसर।।

****

पुरवाई बहती चले, लाये मृदु सन्देश।
खुशी मिले सबको सदा,मनहर हो परिवेश।
मनहर हो परिवेश, रहें हिल मिल कर सारे।
जनहित में अविराम, काम हों उत्तम न्यारे।।।
सभी लगाओ पेड़, चलो अब मिलकर भाई।
धरती हो समृद्ध, बहे शीतल पुरवाई।

****

बरगद पीपल आम की, छूट गई है छाँव।
गाँव छोड़ कर चल दिए, लम्बे डग भर पाँव ।
लम्बे डग भर पाँव, नापते शहर की गलियाँ।
मुरझाए सब फूल, धरा पर बिखरी कलियाँ।
यादों का सैलाब, उमड़ता मन की सरहद।
भीगी अखियन कोर, पुकारे पीपल बरगद।

****

लाई बरखा बावरी, कदम बढ़ाती रेत।
आज खुशी से झूमती, पीली सरसों खेत।
पीली सरसों खेत, खड़ी लहरावै प्यारी।
नीली अलसी साथ, बड़ी इतरावै न्यारी।
शीश गुलाबी रंग, चने पर रौनक छाई।
गेहूँ बाली संग, पवन संदेशा लाई।

****

चपला चंचल चमकती, घन छाए घनघोर।
तेज ताप शीतल किया, त्वरित मचाया शोर।
त्वरित मचाया शोर, घटा बरसी हैं जमकर।
बोलें दादुर मोर, चला हल लेकर हलधर।
सावन भादों माह,सूर्य बारिश में निकला।
इंद्रधनुष के बीच, चमकती चंचल चपला।।

****

खुशहाली के गीत सुन, बदरा हुए अधीर।
दादुर मोर पुकारते, बरसाओ अब नीर।
बरसाओ अब नीर, विकल धरती हो कहती।
बढ़ा सूर्य का ताप, पीड वसुधा है सहती।
बरसा पानी आज,लगे सुन्दर हरियाली ।
बजता मन का साज,हृदय छायी खुशहाली।।

****

दाता ने जीवन दिया, मान मनुज उपकार।
भले काज जग में करो, मन के तजो विकार।
मन के तजो विकार, खुलें जीवन की राहें।
नीयत रक्खें नेक, सदा जो शुभ फल चाहें।
निर्मल सुनो सुजान, बनें निज भाग्य विधाता।
भाव भक्ति निष्काम, सुमिरये निशि दिन दाता।।

****

जीवन रूपी मंच के, नायक हैं जगदीश।
हम कठपुतली मात्र हैं, डोर हाथ है ईश।
डोर हाथ है ईश, वही जीवन के दाता।
करें श्रेष्ठ सत्कर्म, बनें निज भाग्य विधाता।
चुनें राह परमार्थ, कृपा रखना हे भगवन।
मन से मिटे विकार, सफल हो सबका जीवन।

****

शहनाई सी गूँजती,भरता उर आनंद।
अमराई में गूँजता,कोयल का स्वर मंद।
कोयल का स्वर मंद, करे संगत पुरवाई।
छेड़ा मधुरिम राग, मृदुल चलती पिछवाई।
भरी मंजरी डाल, महकती है अमराई।
आई भ्रमर बरात, बजी मंगल शहनाई।

****

जीवन में उल्लास हो, बदले जीवन ढंग।
जीवन खुशियों से भरे, निशदिन बढ़े उमंग
निशदिन बढ़े उमंग, मगन मन रहे विचरता।
हो दुगुना उत्साह, काम फिर नहीं अखरता।
कहे निर्मला बात, खिले ज्यों जीवन उपवन।
उल्लासित दिन रात, रहेगा मेरा जीवन।

****